Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 4408–4413

ECONOMIC PROBLEMS DEPICTED IN KRISHNA SOBTI'S NOVELS

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में चित्रित आर्थिक समस्यएँ

Dr. Khuraijam Uma Devi [1]

[1] Assistant Professor, Hindi Department G.P. Women's College, Imphal Dhanmanjuri University, Manipur, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.5139

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: Krishna Sobti, the famous Hindi writer, has mostly portrayed the middle class of the society in her novels. This includes both the upper middle class and the middle class. The middle class strives to improve the financial condition of its family and struggles with financial struggles along with its mental struggles. Its aspirations are to reach the upper class, for which it is always struggling. Conflict is born from inequality and the inequality in the current social, political and economic policies has been depicted in its novels. Krishnaji has discussed the economic problem in the novel 'Yaaron Ke Yaar'. Man needs money to live. Nothing happens without money. Due to so much inflation, he was not able to fulfill his daily needs properly. In this novel, 'Bhawani Prasad' was sad due to poverty and was helpless for a job. Due to lack of money, the son dies. Bhavani Babu's life becomes miserable due to financial poverty. On the other hand, bureaucratic office environment in which officers are the owners of offices and on the other hand, the condition of clerks is pitiable. In the novel 'Ae Ladki', Sassoon had to remain unmarried throughout her life due to financial inequality. In the novel 'Daar se Bichhudi', Pasho could not become the owner of property. In this novel, there is no clear description of the financial condition of the people living in the village. In the novel 'Mitro Marjani', 'Mitro', even after being married, wants to grace the bed of another man every day to fulfill the financial shortage in the joint family. She has relations with a new man every day. She enjoys by selling her body and earns money and also helps her husband financially. As a result, 'Mitro' becomes a woman of loose character. Financial problems become extremely deformed for 'Mitro'. In the novel 'Dilo-Danish', the complex nature of the family life of the Indian upper middle class and middle class has been depicted. In today's modern era, everyone is becoming crazy in the greed of getting personal freedom and personal happiness. Due to this, family relationships are deteriorating. In this novel, lawyer Kripanarayan comes in the category of upper middle class. He lives a luxurious life while living in a mansion. He lives a double life. Hence, he is financially strong. In this novel, the writer has shown lawyer Kripanarayan leading a double life. In the novel 'Zindaginama', the economic condition of the region of Punjab has been presented. At the time of independence and even years after it, the economic condition of India could not become strong. In this novel, there is a special description of the upper and lower class, middle class farmers and laborers. In this, the writer has based the economic inequality prevailing between Shahs and Jatt laborers, farmers and small-scale businessmen to highlight the then economic inequality in the region of Punjab. In this novel, women also earn money by spinning the charkha, selling vegetables, working as maids in the houses of the rich or by rearing animals. Krishnaji has especially depicted economic corruption in his novels.

Hindi: हिन्दी की सुविख्यात लेखिका कृष्णा सोबती जी ने अपने उपन्यासों में अधिकतर समाज के मध्यवर्ग को चित्रित किया है। जिसके अन्तर्गत उच्च मध्यवर्ग व मध्यवर्ग दोनों का ही समावेश है। मध्यवर्ग, अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए प्रयत्नशील और अपने मानसिक संघर्ष के साथ-साथ आर्थिक संघर्ष से भी जूझता है। उसकी आकांझाएँ उच्चवर्ग तक पहुँचने की होती है, जिसे पूरा करने के लिए वह हमेशा संघर्षरत है। संघर्ष का जन्म वैषम्य से होता है और वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक नीतियों में विषमता को अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। कृष्णाजी ने 'यारों के यार' उपन्यास में आर्थिक समस्या का विवेचन हुआ है। मनुष्य को जीने के लिए पैसों की जरूरत होती है। पैसे के बिना कुछ नहीं होता। महँगाई इतनी बढ़ने के कारण

अपनी रोजमर्रा की चीजों की पूर्ति भी ठीक ढंग से नहीं कर पा रहा था। इस उपन्यास में 'भवानी प्रसाद' गरीबी के कारण दुखी और नौकरी के लिए लाचार बने हुए थे। पैसे न होने के कारण लड़के की मृत्यु होती है। भवानी बाबू के जीवन में आर्थिक विपन्नता के कारण उनका जीवन दु:खमय बनता है। दूसरी ओर नौकरशाही दफ्तरी वातावरण इसमें अफसर दफ्तरों के मालिक है और दूसरी तरफ क्लर्कों की हालत दयनीय है। 'ऐ लड़की' उपन्यास में आर्थिक विषमता के कारण ससून को जिन्दगी भर कुँवारी रहना पड़ा। 'डार से बिछुड़ी' उपन्यास में पाशो, सम्पत्ति की अधिकारिणी नहीं बन सकी। इस उपन्यास में खासकर गाँव में रहने वाले लोगों की आर्थिक स्थिति का कोई स्पष्ट वर्णन नहीं किया है। 'मित्रो मरजानी' उपन्यास में 'मित्रो' विवाहित होकर भी, संयुक्त परिवार में आर्थिक कमी को पूर्ण करने के लिए हर रोज पर-पुरूष की शैय्या को शोभित करना चाहती है। हर रोज नये पुरूष से संबंध रखती है। अपने शरीर का सौदा करके पैसा कमाकार मौजमस्ती करती है और साथ ही पति को अर्थ की सहायता भी करती है। इसके परिणाम स्वरूप 'मित्रो' बदचलन औरत बन जाती है। आर्थिक समस्या 'मित्रो' के लिए अत्यधिक विकृति जनक बन जाती है। 'दिलो-दानिश' उपन्यास में भारतीय उच्च मध्यवर्ग और मध्यवर्ग का पारिवारिक जीवन के जटिल स्वरूप को दर्शाया है। आज के आधुनिक युग में सभी लोग वैयक्तिक स्वतंत्रता तथा व्यक्तिगत सुख पाने के लालच में पागल बनते जा रहे हैं। इससे पारिवारिक रिश्ते बिगड़ते जा रहे हैं। इस उपन्यास में वकील कृपानारायण उच्च मध्यवर्ग के श्रेणी में आते हैं। वह हवेली में जीवनयापन करते हुए ठाठ की जिन्दगी जीते हैं। वह दोहरी जिन्दगी जीता है। अत: वह आर्थिक दृष्टि से मजबूत है। इस उपन्यास में लेखिका ने दोहरे जिन्दगी व्यतीत करने वाला वकील कृपानारायण को दर्शाया है। 'जिन्दगीनामा' उपन्यास में पंजाब के अंचल की आर्थिक स्थिति को प्रस्तुत किया है। स्वाधीनता प्राप्ति के समय और इसके वर्षों बाद भी भारत की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ न हो पायीं। इस उपन्यास में उच्च और निम्न वर्ग, मध्यमवर्गीय किसानों और मजदूरों का विशेष वर्णन है। इसमें लेखिका ने पंजाब के अंचल में तत्कालीन आर्थिक विषमता को उजागर करने के लिए शाहों और जट्ट मजदूर, किसान और छोटे-छोटे रोजगार करनेवालों के बीच व्याप्त आर्थिक विषमता को आधार बनाया है। इस उपन्यास में नारियाँ भी चरखे चलाकर, सब्जी बेचकर, अमीरों के घर नौकरानी बनकर या पशुपालन कर अर्थाजन करती है। कृष्णाजी ने अपने उपन्यासों में विशेषकर आर्थिक भ्रष्टाचार का चित्रण किया है।

Keywords: Economic Struggling, Mental Struggle, Bureaucracy, Inequality, Miserable, Everyday, Bad Conduct, Personal Freedom, Sad, Corruption, Labourer, Farmer Etc, आर्थिक संघर्षरत, मानसिक संघर्ष, नौकरशाही, विषमता, दयनीय, रोजमर्रा, बदचलन, वैयक्तिक स्वतंत्रता, दुखमय, भ्रष्टाचार, मजदूर, किसान इत्यादि।

1. प्रस्तावना

'अर्थ' यानी धन का मानव जीवन में बहुत महत्त्व है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मनुष्य को अर्थ पर निर्भर रहना पड़ता है। धन के अभाव में न तो व्यक्ति स्वयं खुशहाल रह सकता है और न समाज में ही प्रतिष्ठा पा सकता है। इसलिए आदमी अपने परिवार के सदस्यों की आवश्कताओं की पूर्ति करने के लिए परिश्रम करता है और धन उर्पाजन करता है। आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर रहने के लिए मनुष्य नौकरी करता है; उद्योग-धन्धे, कृषि-कार्य, व्यवसाय आदि को धनोपार्जन का साधन बनाता है।

वस्तुत: समाज, राज्य और देश की समृद्धि एवं प्रगति अर्थ पर आधारित होता है। अत: प्रत्येक देश प्रयास करता है कि वह आर्थिक दृष्टि सम्पन्न हो और आत्मानिर्भर हो। आर्थिक अभाव में देश की प्रगति नहीं हो सकती है। ऐसे में व्यक्ति, समाज और राज्य का समुचित विकास भी सम्भव नहीं है। अत: आज के युग में अर्थ का विशेष महत्त्व है। यह समाज के सभी वर्गो के लिए आवश्यक है, चाहे वह पूँजीपति हो, मध्यम वर्ग हो या मजदूर और किसान हो। इसके लिए पूँजीपति और मजदूर, किसानों के बीच पूँजी और श्रम से प्राप्त धन का जो लाभ होता है, उसका समुचित वितरण होना भी आवश्यक है। ऐसा न होना चाहिए कि कोई अनुचित ढंग से धन प्राप्त कर ऐश करे और कोई भूखा-नंगा कष्ट से जीवन व्यतीत करे।

कृष्णा सोबती जी अपने उपन्यासों में विशेषकर मध्यवर्गीय परिवार की कठिनाईयों का वर्णन किया है। मध्यवर्गीय मनुष्य के सम्मुख ही सर्वाधिक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं क्योंकि एक ओर वह उच्च वर्ग में विकसित और विलीन हो जाना चाहता है दूसरी ओर उसकी स्थितियाँ उसे उच्च वर्ग में नहीं रहने देतीं। अत: मध्यवर्ग को संघर्ष की स्थिति ने सर्वाधिक प्रभावित किया है। मध्यवर्ग और निम्न मध्यवर्ग अधिक संघर्ष के कारण बसने वाली जीवन के घुटन को तथा परिस्थितियों के आगे आदमी के टूटने की पीड़ा को कृष्णा सोबती जी ने बहुत करीब से देखा, परखा और महसूस किया है तथा उसकी यथार्थ अभिव्यक्ति अपने उपन्यास में प्रस्तुत की है।

2. उपन्यासों में चित्रित आर्थिक समस्याएँ

यारों के यार उपन्यास में कृष्णा सोबती जी ने भ्रष्ट्राचारी व्यवस्था पर प्रकाश डाला है। लेखिका ने इस लघु उपन्यास में दफ्तरी जीवन का जीवन्त चित्रण किया है। इसमें दो वर्ग हैं – एक है अफसर और दूसरा क्लर्क। उपन्यास की विषयवस्तु नौकरशाही दफ्तरी वातावरण, अफसरों के साथ मिल-जुलकर नाजायज फायदा उठाने वाले लोग जैसे ठेकेदार, टेण्डर भरनेवाले-लोगों का चरित्र-चित्रण भी अंकित है। इतना तो अवश्य ही नजर आता है कि

अफसरों की आर्थिक स्थिति मजबूत है। ऐसी आराम की सारी चीजें उपलब्ध हैं, दूसरी तरफ क्लर्कों की हालत दयनीय है। ऑफिस में काम करने वाले अफसर दफ्तरों के मालिक हैं। इस उपन्यास में बड़े साहब, अवस्थी चावला, सिन्हा अफसर हैं और दूसरी ओर इसमें सरदार हजारसिंह जैसे व्यपारी हैं जो टैण्डर, ठेके और लाइसेंस के लिए सुरा-सुन्दरी की भेंट चढ़ाते हैं, जो रिश्वत देते भी हैं और लेते भी हैं।

कृष्णा सोबती जी ने मध्यवर्ग के आर्थिक पक्ष व आर्थिक विषमता को अपने उपन्यास ''यारों के यार'' में चित्रित किया है। इस उपन्यास में कृष्णाजी ने मध्यवर्ग और उच्चवर्ग के अंतर को स्पष्ट किया है जिसमें इस उपन्यास के प्रमुख पात्र 'भवानी बाबू' घर के रोजमर्रा खर्च से लेकर लड़कों की शिक्षा-दीक्षा और अपने स्टेटस कायम रखने के लिए संघर्ष करते हुए दिखाया गया है। इस तरह उपन्यास में लेखिका ने उसका जीवन आर्थिक विषमताओं से जूझता हुआ चित्रित किया है। भवानी बाबू को आर्थिक स्थितियों के कारण जब अपने बेटे द्वारा साइकिल खरीदने को कहा जाता है लेकिन अपने पास धनराशि की व्यवस्था न कर सकने के कारण अपने छोटे बच्चे 'मुन्नन' के लिए एक साइकिल भी न खरीद पाता है। उसे अपने बेटे मुन्नन के देहान्त होने के बाद उन बातों का स्मरण हो आता है और पश्चाताप होता है। उदाहरण के रूप में ये पंक्तियाँ हमारे सामने आती हैं –

मुन्नन का कथन – ''बाबूजी, हमें साइकिल चाहिए – ले देंगे न?

'क्यों नहीं ... क्यों नहीं बेटे, अगले महीने जरूर दिलवायेंगे।'

किसे मालूम था, साइकिल आने से पहले बेटे की रुखसत की घड़ी आन पहुँचेगी।''

बेटा चल बसा परन्तु आर्थिक स्थिति के कारण साइकिल न दिला सके। इधर बेटा गया और उधर दफ्तर जा रहे काम करने। अगर नौकरी चली जायेगी तो परिवार का गुजारा कैसे होगा, इसकी चिंता लगी रहती है – ''इधर मुन्नन गये, उधर दफ्तर में काम का पहाड़ टूट पड़ा। तबीयत नहीं, पर क्या करूँ, छाती पर पत्थर रखे जा रहा हूँ।''

दूसरी ओर बड़ी कम्पनी के मैनेजिंग डाइरेक्टर की ओर से मेहमानों यानी अफसरों के स्वागत के लिए तैयारियों का एक नूमना यह है – ''चार डाबल सूट-मेडन्स, अशोका, इम्पीरियल और कॉण्टीनेन्टल-पढ़ी-लिखी अच्छे तलक्कुजवाली अंग्रेजीदाँ खुशगवार लड़कियाँ-लिटरेचर और आर्ट की गुफ्तगू में माहिर, खजुराहो, कार-पार्क, उदयपुर और आगरा के अलग-अलग ट्रिप।''

दूसरी तरफ कलर्कों की जिन्दगी-मँहगाई, बच्चों की खर्चीली शिक्षा, परिवार के आकार के साथ-साथ बढ़ती जरूरतें, छोटी तनख्वाह से पूरी कर पाना सम्भव नहीं है। इस प्रकार भ्रष्ट अमीर वर्ग और मुश्किल में फँसा कर्ल्क वर्ग का एक दूसरे के साथ एक तरह से विपरीत आर्थिक परिस्थिति की झलक मिलती है।

जब बड़े साहब, भवानी बाबू को छुट्टी का मंजूरी देता है और घर जाकर आराम करने के लिए कहता है तब वह सोचने लगता है कि कहीं उसे काम से तो निकाल नहीं रहा है। यह विचार उसके दिलो-दिमाग में छा जाता है। कहीं बड़े साहब उससे नौकरी नहीं छिन रहा है। वह परेशान होता है और वह ऑफिस समय पर पहुँचने के लिए निकल पड़ता है क्योंकि आज के जमाने में नौकरी बड़ी मुश्किल से मिलती है और वहाँ नौकरी से निकाले जाने का डर था इसलिए वह अपने बेटे के देहांत के ठीक अगले दिन ऑफिस समय पर पहुँचा। ऑफिस में भवानी बाबू को पाकर सहकर्मियों को आश्चर्य हुआ और बड़े बाबू के निकलते ही शर्मा और बख्शी हँसकर कहते हैं कि –

''क्या कायम मिजाज पाया है – कल बेटा गया और आज हजरत हाजिर! पूछिए साहब, छुट्टी कर लेने से क्या कुरसी लुटी जाती थी।''

फिर भी वह उन बातों को अनसुनी कर देता है और दूसरी ओर उच्च वर्ग के लोग अपनी इच्छापूर्ति के लिए धन के लालच में हमेशा पागलों की तरह कार्य करते रहेते हैं। उच्च वर्ग अर्थात्जो लोग आर्थिक दृष्टि से शक्तिशाली है, कभी-कभी ऐसे वर्ग के लोग अपनी आर्थिक शक्ति का गलत उपयोग करते हैं, इसका चित्रण इस उपन्यास में मिलता है।

एक समय था जब व्यक्ति अपनी योग्यता और परिश्रम से पद और सम्मान प्राप्त करता था लेकिन आज तो तरक्की की अनेकविधि युक्तियाँ या यों कहें तो शार्टकर्ट ईजाद कर लिए गए हैं। कोई चमचागिरी का सहारा लेता है तो कोई रिश्वत का। इसका उदाहरण द्रष्टव्य है – ''तरक्की आजकल काबलियत से नहीं, मुँहचुमाई और पाँवघिसाई से मिलती है ...।'' आज के कलाबाजार में सिर्फ काली-कारस्तनियों से ही तरक्की मिलती है। और उन्हीं से ख्वाबों के महल हकीकत बनते हैं। चाहता है लूटना मजे इस जिन्दगी में तो ब्रादर मेरे, मोहरे रख और मोहरे उठा। रिश्वत दे और रिश्वत ले।

आज धन के बलबुते पर यह समाज चलता है इसलिए हरेक पैसा कमाने की धुन में, तरक्की पाने की धुन में है। धन और तरक्की के लिए भष्ट्राचार, धोखाधाड़ी, रिश्वतखोरी आज की आम बात बन गई। 'यारों के यार' उपन्यास में इसका स्पष्ट उदाहरण मिलता है, जैसे – ''जो लक्ष्मी के जोर से इस कलयुगी देवी को रिझायेंगे, भेंटा चढ़ायेंगे, वही खुशकिस्मत मुरादें भी पायेंगे।''

इस रहस्य को क्लर्क भी जानते हैं। किसी भी सरकारी दफ्तर में फाइल निकालवानी हो, साइन कराना हो तो बिना रिश्वत लिए संबव नहीं। यह क्रम हर जगह फैला हुआ है। विजीलेंस वाले भी रिश्वतखोरी का गंगाजल पीकर इक्वायरी करते हैं।

आज मध्यवर्ग परिवार और निम्न मध्यवर्ग परिवारों की आर्थिक स्थिति को सुधार लाने के लिए पढ़ी-लिखी या अनपढ़ स्त्रियाँ भी बाहर निकलकर मजदूरी करने लगी हैं। इसका फायदा उच्चवर्ग के लोग उठाते हैं। ऐसे कुटनीतिज्ञ, अफसर और दफ्तरों के मालिक हैं। वहीं र्क्लकों के जीवन में एक प्रकार का बौनापन फैला है, जहाँ लाख कोशिश करके भी कुछ नहीं हो सकता, ये तो किसी बड़े हजूर की रेल-पेल में फँसे हैं। औरतों से संबंधित इस भ्रष्टाचार का पर्दाफाश होता है। इसका अच्छा उदाहरण कृष्णाजी ने शर्मा और सूरी के संवादों में दर्शाया है –

''औरतों के कोऑपरेटिव से क्या मतलब है तुम्हारा दोस्त? वाह भोले बादशाह, रहते किस दुनिया में हो! हर नाक-नक्शे और कद-बुत की शेयर होल्डर जनानी का कार्ड तैयार रखता है। सेठ और टेलीफोन के जरिये इजारबन्द-सार्विस चलाता है।''

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट मिलता है कि उच्चवर्ग और उच्चमध्यम वर्ग आर्थिक दृष्टि सम्पन्न हैं तथापि उसमें और ऊँचा उठने की तथा आगे बढ़ने की ललक है। कृष्णाजी के उच्चमध्यम वर्गीय सभी पात्र आर्थिक रूप से सम्पन्न तो हैं फिर भी और ऊँचा उठने को प्रत्यत्नशील हैं।

अर्थ जीवन का आधार है। इस पर जीवन की सारी स्थितियाँ निर्भर होती हैं। अर्थ के अभाव में नारी को नारकीय जिन्दगी जीनी पड़ती है। आर्थिक समस्या का मूल कारण निर्धनता, गरीबी, बेकारी और धन का अभाव है। अर्थ है तो नारी की जिन्दगी सार्थक होती, नहीं तो उसका जीवन नरक बन सकता है।

'यारों के यार' उपन्यास में अर्थ के कारण ही 'तमाशा' और 'तमन्ना' की जिन्दगी नरक हो गई है। तमाशा ने अपने स्त्रीत्व को, उसूलों को, गरिमा को तमाशा बना दिया है। उसके जीवन में प्रमुख है 'पैसा' और इस पैसे को बटोरने का एक ही तरीका वह जानती है – अपने अफसर को खुश रखना। जैसे भी हो और जिस किसी भी कीमत पर हो, तो पहले-पहल जिस चीज का सौदा होता है, वह है – उसका शरीर। अर्थ, तमाशा के जीवन में एक समस्या बनके आयी है। तमाशा के समान तमन्ना भी पैसे के लिए अपना सब कुछ त्याग कर चुकी है। तमाशा और तमन्ना दोनों के पास पैसे नहीं है। इसी पैसे को प्राप्त करने के लिए उसने अपना जीवन नरक में ढकेल दिया। सूरी के शब्दों में – ''जानता भी है इस कचहरी के कट्टे को! बीस ट्रकें, दो चिटफण्ड और काला बाजार स्मगलर, सिण्डीकेट का मालिक है औरतों का कोऑपेरटिव बहनचोद अलग से चलता है।''

इससे यह स्पष्ट होता है कि अर्थ को या पैसा को प्राप्त करने के लिए नारी को केंद्रीभूत माना गया है। लेकिन इसमें नारी का जीवन नितान्त अर्थहीन होता जा रहा है। फलत: उसके जीवन में अर्थ एक समस्या बन गयी है। 'समय-सरगम' की 'खूकू' निम्न वर्ग परिवार से है। उनकी जिन्दगी अर्थ के बिना अर्थहीन हो गई है। खूकू, कामिनी की नौकरानी है लेकिन वह कामिनी के बुढ़ापे के फायदा उठाकर सबकुछ हथियाना चाहती है। उदाहरण के रूप में – ''खूकू की आँखे चमकने लगी थीं। आरण्या ने कुछ रूपए आगे किए।''

''मित्रो-मरजानी'' की बालो पैसे के लिए ही अपना शरीर बेचती है। कृष्णाजी ने अपने उपन्यासों में वेश्या समस्या पर बहुत अधिक प्रकाश तो नहीं डाला परन्तु ''मित्रो-मरजानी'' में 'मित्रो' की माँ 'बालो' आर्थिक परिस्थिति के कारण वेश्या के रूप में रही और वृद्धावस्था में वेश्याओं द्वारा भोगी जाने वाली तकलीफों का सस्पर्श वर्णन करते हुए बालो कहती है – ''जब तक यौवन है, वेश्या को चाहने वालों की कमी नहीं रहती, दिन-रात उन पर पैसा बरसता है और वेश्याओं का जीवन अकेलेपन व गुमनामी के अँधेरों में डूब जाता है।''

इसी तरह कृष्णा सोबती जी ने अपने उपन्यास 'ऐ लड़की' में आर्थिक समस्याओं को प्रस्तुत करने के साथ-साथ नारी की आर्थिक स्वतन्त्रता की तरफदारी करती हुई लिखती है – ''उसका वक्त तब सुधरेगा जब वह अपनी जीविका आप कमाने लगेगी। सोचने की बात है – मर्द काम करता है, तो उसे इवज में अर्थ-थन प्राप्त होता है। औरत दिन-रात जो खटती है वह बेगार के खाते में ही न! भूली रहती है अपने को मोह ममता में। अनजान। बेध्यान। वह अपनी खोज-खबर न लेगी तो कौन उसे पूछनेवाला है।''

नारी का यदि शोषण का प्रतिकार करना है तो पुरुषों की गुलामी से मुक्त होना है, अपने फैसले स्वयं करने है, पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त करना है तो सबसे पहले आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना होगा, अपनी आजीविका स्वयं कमानी हागी अन्यथा पुरुषों पर आश्रित होकर किसी भी प्रकार की मुक्ति की आकांक्षा करना स्त्रियों के लिए सुनहरा ख्वाब ही हो सकता है। हकीकत नहीं। सुप्रसिद्ध लेखिका प्रभा खेतान के शब्दों में, ''सैकेंड सैक्स में ठीक ही लिखा है कि औरत की पहली लड़ाई अर्थ की दुनिया से शुरू होती है। मैंने भी जीवन जीते हुए यही सीखा कि पैसे कमाने से स्त्री निर्णय लेना सीखती है और निर्णय की क्षमता उसके संघर्ष को मजबूत करती है।''

कहा जा सकता है कि आर्थिक परतन्त्रता नारी विकास के मार्ग में बहुत बड़ी बाधा है जो नारी की समस्त प्रकार की मुक्ति को अवरुद्ध किए हुए है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि आर्थिक आत्मनिर्भरता नारी की समस्त समस्याओं का समाधान कर देगी लेकिन इसमें भी संदेह नहीं कि आर्थिक आत्मनिर्भरता ही नारी को यह धरातल दे सकती है, अपने संघर्ष को मजबूत बना सकती है।

'मित्रो मरजानी' उपन्यास में कृष्णाजी ने समाज की आर्थिक स्थिति एवं उससे सम्बन्धित समस्याओं पर खुलकर कोई प्रकाश नहीं डाला है। उनका पूरा प्रयास मित्रो के चरित्र के विकास की ओर रहा है जो नूरमहल की प्रसिद्ध कसबन 'बालो' की पुत्री है और एक मध्यम वर्ग वालों के घर ब्याही गयी है जिनका मंडी में व्यापार चलता है। जैसा कि विदित 'बालो' का पेशा ही ऐसा है कि उसका यौवन काल मौज-मस्ती में बीता और उसके संग-संग मित्रो का बचपन और यौवन का प्रारम्भिक काल मौज-मस्ती में ही गुजरा। उसकी माँ एक वेश्या है। उधर मित्रो के ससुराल में वैसे आर्थिक स्थिति ठीक-ठाक ही है सिर्फ कुछ देन चढ़ गया है जो छोटे-मोटे कारोबार में होते ही रहता है गुरुदास अपने को तसल्ली देते हुए कहता है – ''जो मंडी का व्यापार करेगा, उसी के सिर देना भी चढ़ेगा और उसी की हथेली के जोर से उतरेगा भी।''

चूँकि 'मित्रो मरजानी' उपन्यास एक संयुक्त परिवार की कहानी है, इसलिए पंजाब की तत्कालीन यानी कृष्णा सोबती ने, जिस काल की घटनाओं का वर्णन किया है, उस काल की आर्थिक स्थिति एवं आर्थिक समस्याएँ, तो अवश्य नहीं होगी परन्तु लेखिका ने इस पर कोई प्रकाश नहीं डाला है।

''डार से बिछुड़ी'' उपन्यास में कृष्णा सोबती जी ने तत्कालीन पंजाब के समाज, खासकर गाँव में रहने वाले लोगों की आर्थिक स्थिति का कोई स्पष्ट वर्णन नहीं किया है। लोगों के आय का श्रोत, कल-कारखाने, पूँजीपति, जमींदार, किसान या मजदूर की आर्थिक स्थिति और उनकी समस्याओं को कहीं भी मुख्य रूप में सामने नहीं लाया गया। इस उपन्यास में लेखिका ने उच्चमध्यवर्ग और मध्यवर्ग परिवार को दर्शाया है। शेख जी और दिवान जी

उच्च मध्यवर्ग की कोटि में आते हैं। पाशो का मामा मध्यवर्ग में आते हैं। पाशो के घर किसी नौकर या नौकरानी का वर्णन नहीं मिलता है न ही आभूषणों से अच्छादित महिलाएँ। जहाँ तक खान-पान रहन-सहन की बात है, इनकी कमी नहीं है। क्षत्रिय परिवार है, शेख जी के घर ठाट-बात है। पाशो की माँ खुद कहती है, ''बच्ची तेरी माँ को इस घर में कोई कमी नहीं।'' सचमुच शेख जी के यहाँ कोई कमी नहीं है। दूसरी ओर दिवानजी के घर सोने-चाँदी, धन-दौलत से भरपूर हैं। पाशो का मन गहने-कपड़े का नाम सुनकर बहुत खुशी हो रही थी। मौसी, पाशो से कहती है कि तुम इस घर की मालकिन है, इसलिए अब नहा-धोकर तनिक नींद लेने के बाद गहने-कपड़े पहन लेने की बात सुनकर वह उतावले हो रही है और वह जब नींद से जागी तो –

''ढली दुपहरी मदमाती नींद से जागी तो मौसी गोटे-जड़ा गुलाबी जोड़ा ले आयी और ले आयी ढेर-से गहने-बाँहों के जड़ाऊ कड़े, गोखरू मोती-जड़ी मुँदरियाँ, आरसी, नाक की शिकारपुरी नथ, कानों के पीपल-पत्ते, सिर के चौंक, फूल और मौली! सज-सँवर पीढ़ी पर बैठी तो पास खड़ी मौसी ने सिर-वारना कर माथा चूम लिया – 'मैं सदके जाऊँ'!'' इस उपन्यास के लालाजी भी उच्च मध्यम वर्ग के व्यक्ति हैं तभी तो उन्होंने बरकत को पाशो के बदले घड़ भर मोहरे दी हैं – ''समझ रख बीबी बरकते को घड़ा-भर मोहरें दी है, तू अब इस घर की दात!''

'डार से बिछुड़ी' में पाशो एक पशुवत जीवन जी रही है। सभी मर्दों ने उसको एक चीज या साधन समझकर उपयोग किया है वह भी दर-दर भटकती रही एक जानवर की तरह तथा हर किसी ने पाशो को अपने घर के खुंटे से बाँधकर और अपनी दासी बनाकर रखना चाहा। ऐसा क्यों? क्योंकि पाशो आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं हो पाई है। उसके निकट अपना पेट भरने के लिए कोई मार्ग नहीं है। पाशो अपने पैरों पर खड़े रहना नहीं सीख पाई है। शायद इसलिए उसे भी उस पुरुष के पीछे चलना पसंद है। वह जब अपने घर में थी तब वह उसका गुजारा नानी, मामा-मामीओं का काम होता था, विवाह हुआ तो पति पर निर्भर, पति की मृत्यु के पश्चात्बरकत दिवान सरदार के तीन बेटों पर। किसी न किसी पर उसे उपजीविका के लिए निर्भर रहना ही पड़ा है।

प्रस्तुत उपन्यास में प्राप्त नारियों के आर्थिक जीवन में भी मूल्य विघटन परिलक्षित होता है। अब अर्थ मानव जीवन का सबसे सशक्त मूल्य बन गया है। इस अर्थ-प्रधान युग में नए-नए मूल्यों का आविष्कार होने लगा है। अत: मूल्य विवरण का यह प्रमुख अंग बन गया है। अर्थ की प्राप्ति के लिए समस्त नीति-मूल्य ठुकराये जाने लगे हैं। स्वार्थी लोग अर्थ-प्राप्ति हेतु नए जीवन मूल्यों का आभास करा रहे हैं। 'यारो के यार' में तमाशा और तमन्ना अर्थ के प्राप्ति के लिए अपनी विद्वता अपना ज्ञान तथा अपनी नीतिमत्ता को तिलांजली दे रही है। इसलिए उनके जीवन में अर्थांजन के कारण मूल्य विघटन आ चुका है। तमाशा पैसे के लिए दारजी जो भी कुछ कहेंगे टाइप करते जाती है। जैसे –

''बीवियों को फ्लोर पर उलझाये रखने के लिए

दर्जन-भर किराये के लौण्डे

एक मेज मंगलवारी पकवान।''

'जिन्दगीनामा' उपन्यास में पंजाब अंचल की आर्थिक स्थिति जो खासकर बीसवीं सदी के भारत के स्वाधीन होने के पूर्व और स्वतन्त्रता प्राप्ति के वर्षों बाद भी कामोवेश कायम रही, इसका यथार्थ वर्णन किया गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व भारत में लगातार आन्दोलन हुए। प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध का प्रभाव ब्रिटिश सरकार पर भी बुरी तरह पड़ा। फिर पंजाब या गुजरात इससे बचकर कैसे रह सकता है। स्वाधीनता प्राप्ति के समय (1947) और इसके बर्षों बाद भी भारत की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ न हो पायी। पंचवर्षीय योजना बनी। आर्थिक सुधार के लिए अनेक रूप से प्राप्त और देश के स्तर पर कार्य किये गए परन्तु संतोषजनक परिणाम हाथ न आया। यातायात, शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि पर विशेष ध्यान दिया गया। परिणाम अच्छा निकला, सुधार होने लगा और बाद में पंजाब के अंचल में भी हरित और खेतक्रान्ति की शुरुआत हुई परन्तु कृष्णा सोबती जी के 'जिन्दगीनामा' उपन्यास में इसके पूर्व की आर्थिक स्थिति एवं समस्याओं का वर्णन मिलता है।

3. निष्कर्ष

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि अधिकांशत: मध्यम वर्ग के लोग अपने परिवार की सुख-सुविधा के लिए हर प्रयास करते हैं। आर्थिक स्त्रोत के अभाव होने पर उन्हें आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है जिससे परिवार के सदस्यों के बीच तनाव होता है और इस कारण से परिवार टूटने की स्थिति में आ जाती है।

आज मध्यवर्गीय परिवारों में दिखाने की प्रवृति इतनी बढ़ गई है कि आर्थिक स्त्रोतों की परवाह किए बगैर ही वह अपने स्टेट्स को बनाए रखना चाहता है। मध्यवर्ग का सामाजिक पक्ष अत्यन्त सोचनीय है, जिसमें वह अपनी पारिवारिक समस्याओं व आर्थिक समस्याओं से जूझता रहता है। अधिकतर परिवारों का जीवन संघर्षरत व अशांत ही रहता है। शहर में मध्यवर्ग के लोग ज्यादा रहते हैं और मध्यवर्ग के चरित्र की खासियत है वे खुलकर लोगों से नहीं मिलते, अपने में ही सिकुड़े सिमटे रहते हैं। अधिकांश स्थितियों में शहर का मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं को अधिक सुगमता से चित्रित किया गया है। शहर के जीवन में तरह-तरह के नये नवाब और पैचीदगियाँ पैदा हो रही थीं। संयुक्त परिवार की परंपरागत संस्था टूट रही थी, आर्थिक दवाबों के कारण स्त्रियाँ काम के खोज में बाहर निकलने लगीं हैं, अर्थाभाव के कारण लोग गाँवों से शहरों की तरफ भागे जा रहे हैं और शहरों से निकलकर विदेशों की ओर भागे जा रहे हैं। आर्थिक अभाव के कारण नयी-नयी स्थितियाँ, नयी-नयी समस्याएँ सामने आने लगी हैं। मध्य वर्ग की समस्याओं को कृष्णा सोबती जी सर्वाधिक प्रभावित रूप में व्यक्त किया है। इस वर्ग में आर्थिक संघर्ष के कारण बसने वाली जीवन की घुटन को तथा परिस्थितियों के आगे

आदमी के टूटन की पीड़ा को कृष्णाजी ने बहुत करीब से देखा परखा और महसूस किया है, तथा उसकी यथार्थ अभिव्यक्ति अपने उपन्यासों में चित्रित किया गया है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि जीवन में आर्थिक समस्याओं का गहरा प्रभाव होता है। वस्तुत: आज के भौतिकवादी युग में तो अर्थ ही एक प्रभुसत्ता हो गयी है और जीवन में अनेक समस्याओं का मूलभूत कारण यदि खोजा जाय, तो हमें कोई न कोई आर्थिक समस्या ही नजर आयेगी। कृष्णाजी ने प्रस्तुत समस्या को अपने उपन्यासों में उजागर किया है।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

डॉ. साधना अग्रवाल (1985), वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन और दाम्पत्य जीवन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
डॉ. मोहनलाल कपूर (2005), प्रमुख हिन्दी उपन्यास एक विश्लेषण, नेहा प्रकाशन, दिल्ली।
निर्मला जैन (1992), साहित्य का समाज शास्त्रीय चिंतन हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
डॉ. उर्मिला (1978), स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएँ, अनुराग प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली।
डॉ शहेनाज जाफर वासमेह (2009), कृष्ण सोबती का कथा साहित्य एवं नारी समस्याएँ, कानपुर, अभय प्रकाशन।